

1. 228 I

अभिक्रमे षष्ठि १५१०३
१०१६ —

श्रीनारायणस्य धर्मसमाप्त

श्रीनारायणस्य धर्मसमाप्त
1. 228
I



भीमशेऽयनमः॥ आप देवतायनमः॥ अथ सरकालिनवत्रवि
धिलिख्यते॥ ॥ आदोयवा विक्षेपनः॥ पीतवूरोन असदलषतकोन
त्रिकोनवतुः स्फोटा आदिकुलिम्प्य॥ लाजा विक्षेप्य॥ तदुपी देवऽ
स्थितिऽलादि॥ वलिपात्र अर्घ्यपात्र जलपात्र शोषपात्र स्वस्वस्थाने
स्थाप्य॥ वीरुका विदिकृत्या॥ कलसेनी र्थजल॥ गङ्गाजल॥ सर्वो
षधीपश्यामन॥ पशुपदव्यव॥ वस्त्र॥ गोमय॥ शर्षपदुवाक्षतादि
कंनिधायः॥ आयमः॥ नात॥ जलेनयवसिंवनं॥ किनिरविच
कीवनायदु अद्यायफट्॥ अपवित्रपवित्रेवा॥ सौं अद्यायफट्
॥ वनुर्मत्कारा सोधन॥ हंयवरूपी दुर्गादेवी इह्यवो जीवप्राप्त

सुस्थिरोभव१०॥सूलेन१०॥गायत्री१०॥ ॥ततो सुवेलायायवावि
 क्षेपणम्॥सूलेनमेवेष्टा॥अथमेवेष्टा॥शर्षपानुविकिरियेत्॥श्रीसूक्त
 तासूत्रेराजली॥इतिस्वाविक्षेपः॥ ॥अथघनस्थापनम्॥बालुका
 यारिशाकोरोअष्टदलीति॥तदुपारिकलशंनिधाय॥देवेति
 भक्तिश्रुतमेपरिवारसमन्विजे॥यावदशमीपर्यंतंनोवत्सवं
 स्थिरोभव॥ततो कलसपूजा॥सारदीयलशायद्मासनन
 मःपूष्यंचन्द्रतिदूर्यशोपकीतपुष्पधूपदोषांत॥इतियवा
 विक्षेपघटस्थापन॥ततोयजमानेनआचमन्३॥यास

पुष्पभाजनं॥अथदेशकालौर्लक्ष्य॥मानवगोत्रयजमानस्यअमुकनाम
 धेयस्यसकलपरिवाराणांदीर्घायुधारेण्यमैश्वर्यवृद्धिकामनायाःसरत्क
 लिनवरत्रेनवदुर्गापीत्यथंघटस्थापनयवाविक्षेपनश्रीस्विष्टदेवता
 पीतयेयथाशक्तिदेवार्चणपूजाकृतपुष्पभाजनसमर्पयामिनमः॥ ॥
 श्रीसंवर्ता०॥ब्रह्माणी०॥श्यामा रक्ता०॥मायाकृष्णलनी०॥सिद्धिस्तु
 ॥अथावा०॥कमलपुष्पभाजनसमर्पयामिनमः॥आयुस्वशास्त्र
 खान॥वाक्यपूर्ववर॥अविभिषेकसुमुहूर्तमस्तु॥ऊकारवायुजीतदुपारि
 परमंवज्रपाशतदुर्दु॥कालीवर्णतियुक्ततदुपरिपरमंवह्निजीतसहस्र॥इ
 दुविद्युलयान्तिसितकमलवरक्षीरधारअवंतदृष्टाकृतंतननिन्दहति
 कुलवरम्॥तुलोहिपाप॥पञ्चामृतादिस्नान॥वन्दना॥श्रीस्विष्टव

नृनदिव्यं गी-धादि सुमनोहरं ॥ आपदाहरतो नित्यं लक्ष्मीराज्य सुषा निव ॥ सिद्ध
वीरि धीरि महवीरवीर भस्म सुलेपनं ॥ त्रैलोक्याकर्षण देवी तिष्ठ राहोहन मुने
मम ॥ अक्षतं ॥ अक्षतं ॥ अक्षतं ॥ कामार्थं धर्मकामाय मेव वा ॥ रक्षितं ॥ भजे कामं व
श्चे च पराङ्गतिं ॥ यतो पवीत ॥ पुष्पं ॥ नाना पुष्प सुगंधानि मालती कुसुमा निव
गतो भाग्या सिद्धि दं भद्र पुष्पा रोहन मुने मी ॥ ॥ जायन्ते ॥ सूर्यार्घ्यं ॥ वाक्य पुर्व वत्
यवा ॥ वक्ष्ये न घट्स्थापये देवा र्चनार्थं पूजां कर्तुं श्री सूर्याय अर्घ्य निमः ॥ पुष्प ॥ गुरु
नमस्कार ॥ ॥ अर्घ्य पात्रा न तिल पात्र ॥ जल पात्रा ॥ शिख पात्र ॥ आत्म्यां ॥ कुर्मा ॥ कि
निया आदि ॥ ताम्र जल पात्र पूजा ॥ शिष पात्रा ॥ ततो दुव्य सोधनी ॥ वतुः सत्कार ॥
गायत्री मंत्रे नमस्त्य सुद्रा आदि ॥ ॥ त्रिक दि मुद्रा ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं पत्तु ररत्ना दि
मलेन सोधन ॥ ॥ आय मोचन ॥ ॥ श्री श्री श्री ॥ ज्ञा पं वि सं वे य ॥ ॥ मने आ
पय रत्ना ह ॥ ॥ श्रीं श्रीं श्रीं ह्रस्व आपो वि भु वे य ॥ ॥ अमर्त आपय रत्ना ह ॥ ॥

प्राग्निर्वृद्धलक्षणमिदं ॥ १ ॥ अमृतं आपयं ॥ स्वाहा ॥ अमृतमत्रेण मोक्षयन् ॥ ऐं भ
 म्ने अमृतोद्वे अमृतवृषिणी अमृतवृषिणी अमृतं आपयं ॥ स्वाहा ॥ पूजा ॥
 शुभं भानन्दभैरवयवोषट् ॥ २ ॥ आनन्दभैरवीवषट् ॥ भावहरादि ॥ धेनु
 वृ ॥ योमिमुद्रां दशयेत् ॥ ३ ॥ अर्धपात्रेद्रव्यनिधायो ॥ ऐं वस्त्राण्डवल्गु
 वृ ॥ तं मन्त्रं ॥ भावः ॥ आपूर्णितं ॥ महं पात्रपीयूषं शमा मृतं ॥ अघपात्रपूजा
 वि ॥ ४ ॥ अमृतमुद्रा ॥ भूत ॥ अद्वि ॥ आत्मपूजा ॥ जतो वामहस्ते नन्दनाक्षत्र
 पं ॥ ५ ॥ त्वावलितेष्टोता ॥ ध्यायाद्य ॥ ६ ॥ नमो अष्टकाये ॥ भैरव उवाच ॥ जयन्त
 मालिना देवी निमले मलेनाशना ॥ ७ ॥ नमो शक्तिः प्रभू देवी बुद्धि ते जो विवर्द्धनी ॥
 जन्नी सर्वभूतानां सारस्वत्यवस्थिता ॥ माता वीरवली देवी का हरयद्रुतवत्स
 रे ॥ जयति परमतत्त्वनिर्वरा ॥ सभूत ते जो मयी निष्मृताः ॥ वक्तुं पापहृन्नाशन ॥ न
 स्वमिदं क्रिया मङ्गला करज्वरत्वा पुनः सुप्तागेन्दुवत्पुण्ड्रसाकाररूपा प्रभू

कट ॥ ह्यं अग्रहास्यं नमः ॥ द्यं ननु नीभा नमः ॥ त्व
मयसा नमः ॥ यं अनामिका नमः ॥ हं वृ
हकाका नमः ॥ अरुह नरुह नमः ॥ एव
हमादि ॥ हं हिरायां ॥ संहिरा ॥ हं लेलाट ॥ न
पुरवृत्तौ ॥ हं हं ॥ वं नासौ ॥ रंग हं ॥ यं रज
उपादयो ॥ अग्रहास्यं ॥ हं हं ॥ ॥ आव

नमः ॥ हं ननु नीभा नमः ॥ द्यं ननु नीभा नमः ॥ त्व
मयसा नमः ॥ यं अनामिका नमः ॥ हं वृ
हकाका नमः ॥ अरुह नरुह नमः ॥ एव
हमादि ॥ हं हिरायां ॥ संहिरा ॥ हं लेलाट ॥ न
पुरवृत्तौ ॥ हं हं ॥ वं नासौ ॥ रंग हं ॥ यं रज
उपादयो ॥ अग्रहास्यं ॥ हं हं ॥ ॥ आव

ॐ आर्चिशाजन्म देवपा० पू० ॥ **पुनः** ॥ प
 सोनं सवस्थं बद्धवक्तं त्रिलोचनं ॥ खवरणं च
 मलादीपिं सर्ववदराणामनुतं ॥ १ ॥ खवरणं पूष
 वक्तं तु दक्षिणे कस्मिन्नाभितं ॥ २ ॥ पीतवर्णं
 चतुर्भुजं रक्तं ॥ ३ ॥ रक्तं स्पृष्टं क्षितिपूष
 धेनं मुनिरमेव च ॥ तदुदुपीतवर्णं वपुता धाद

क्षितिपूष ॥ ३ ॥ रक्तं मुनिरमिन्नादुनदुधेन मु
 नमर ॥ ४ ॥ अष्टादशभुजं देवकं वधाहारभूषितं
 ॥ ५ ॥ खड्गफलकधरं देवत्रिभूलामदुशंतथा ॥
 भुजं कमण्डलुं प्रष्टुमर्हत्वा दुःखं वचं ॥ ६ ॥ वा
 तांधगुसुसंयुक्तं पञ्चधरासुशोभितं ॥ वक्तुं च व
 त्तपाणिवरदाभयहृताकं ॥ ७ ॥ काद्यविन्दु

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
महाभारत ॥ १ ॥

धरं देवं नाना लोका हभूषितं ॥ सर्वपीनमयं वतं
आसनं सुखसांस्थितं ॥ १ ॥ एवं भूतं नवात्मानं
महालोकं रुमं हलं ॥ ध्यायेत्सुखं पुनः ॥ आ
शिष्यसिद्धिभाविष्यति ॥ २ ॥ ॐ नमो
ॐ नमो ॥ ३ ॥ अथ नमो ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ ॐ नमो ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥ ॐ नमो ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥ ॐ नमो ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥ ॐ नमो ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥ ॐ नमो ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥ ॐ नमो ॥ २० ॥

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥ ॐ नमो ॥ २२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २३ ॥ ॐ नमो ॥ २४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २५ ॥ ॐ नमो ॥ २६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७ ॥ ॐ नमो ॥ २८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २९ ॥ ॐ नमो ॥ ३० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३१ ॥ ॐ नमो ॥ ३२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३ ॥ ॐ नमो ॥ ३४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥ ॐ नमो ॥ ३६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३७ ॥ ॐ नमो ॥ ३८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९ ॥ ॐ नमो ॥ ४० ॥

विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥ अथ विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥
विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥ अथ विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥
विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥ अथ विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥

स्वर्गेश्वर उवाच ॥ अथोह अघोरमुखी ह्रीं ह्रीं किंकिरी ॥
विष्णुपादुकां पू० ॥ वीर ॥ ये के वियोगिनीनां ॥
आद्याविशालां ॥ आवाहनादिधनयानिमु
द्रा ॥ विष्णुपादुकां ॥ त्रैलोक्यसु ॥ त्रैलोक्यं ॥
नमो लोचनम् ॥ ॥ ३ ॥ आभारं जादि ॥ पंचप्रेता
सनाय ॥ ॥ ४ ॥ नरद लाधिपतये विष्णुप्रेतासनाय ॥
सूर्यमण्डलाधिपतये विष्णुप्रेतासनाय ॥ ३ ॥ अग्नि

मण्डलाधिपतये रुद्रप्रेतासनाय ॥ ३ ॥ वृषभमण्डला
धिपतये ईश्वरप्रेतासनाय ॥ ३ ॥ शक्तिमण्डलाधि
पतये सदाशिवप्रेतासनाय ॥ ३ ॥ वृषभमनाय ॥
सिंहमनाय ॥ ३ ॥ **ध्यानं** ॥ वृषभसंस्थितं देवख
वरं रूपसंस्थितं ॥ एकवक्त्रं त्रिनेत्रं च भुजाष्टाद
शधारिणं ॥ ५ ॥ मण्डपं शंखं चतुर्भुजं शंखं
खं च वीणां च वरदं भयहस्तकं ॥ २ ॥ वाम

विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥ अथ विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥
विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥ अथ विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥
विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥ अथ विष्णुपञ्चमस्तोत्रम् ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ गायत्री ॥ ॐ उग्रचण्डाय
 विश्वहर्त्रा देवी वीमलेश्वरी नमः ॥ चण्डिका प्रचोदयात् ॥
 ॥ सिद्धिदायिनी ॥ ॥ वलिहाराय नमः ॥ शिवाभगवति श्रे-
 वसायाभद्रास्तुतये नमः ॥ किं किं नीविमलेश्वरी वज्रमजिह्वा
 त्वत्कृष्णी ॥ धर्मरक्षादरेवौ समाता किं किं नीका किं नीन
 था ॥ सर्वविघ्नविनाशार्थं तर्ध्वास्ता परिपूरक ॥ त्रयोद-
 शमैलापंक श्रीसिद्धिदायिनी भ्यो वलिगृह्णत्याह ॥ सिद्धि-
 दायिनी विष्णवे नमः ॥ वीमलेश्वरी प्रचोदयात्

सर्वज्ञानापायार्थे ६

गुह्यकालिपुर्ववत ॥ ॐ ह्रीं सिद्धि करालो ह्रीं ह्रीं हूं ह्रीं
 पुं नमः स्मोहा ॥ १ ॥ महो मा न न र्प ह काल क र्पिणी
 धीमहि न नो योगिनि पु चो दया ॥ कालो ॥ **गुह्यकाल**
पुर्ववत ॥ ऐतौ सौ कौ भूमि चक्र काले ह्य ठी श्री सिद्धी
 शना थात्म के श्री का ॥ स भरी देवी रुद्रात्म शक्ति सहि
 नायया ० पु ॥ ऐतौ सौ ह्रीं सूर्य चक्र जाल ध्वर प ठी डे
 डी शना थात्म के श्री ॥ वज्र भरी देवी श्री विष्णु
 शक्ति सहितायया ० पु ॥ ऐतौ सौ ह्रीं सोम चक्र पु
 र्गि री गुरु रेवरी सना था ॥ स के श्री ॥ भाग्य सानिनी

श्रीवृद्धात्मशक्तिशक्तिताय श्रीपा० पू०॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं व
 सवक्त्रे ओ३०॥ यानपीठे च यशनाथात्मिके श्रीमहा
 परबुद्धदेवीपा० पू०॥ बलि॥ **॥ १॥** ह्रीं त्रिपुरदेवी ह्रीं
 अहे कोमेश्वरी धाम ह्रीं त्रिः ह्रीं नः प्रबोदयान्
 संधायति पित्रे आवाहनादि त्रिदेवपुजा पर्वपर सुप्र
 नयना॥ **॥ श्रीगोव्याविद्यापूजा॥** आचार शक्त्यादि॥ ८॥ ॐ ह्रीं
 इ प्रणासनाय पा० पू०॥ १॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

दक्षनकाशी

॥ १ ॥

की की की

१) मध्यवर्ति आकाश
क्षेत्रवर्ग ॥ १२६४४००॥

दिन्दमला
 बोदति
 भुवनेश्वरि
 भैरवी
 वगलासु

५७२११

प्रमावती

[illegible]

मातंजी
कमला

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शिमुद्रयाविमज्ज्य ॥ ॥ महलजात्र ॥ इषायाधनिम
 तर्कता ॥ महलजिमज्जनं ॥ एकानेकभवर्गिसह
 सापूर्णेधिरासवेभूतेशीगगनापमाभगवती ॥ वि
 धेधरादक्षिण ॥ ज्ञानागम्यकुलधरोकुलगणव
 हरापदिम्यायिकां श्रीलामांपुराणामासिधिवज्जननींद
 ईधिरासिदिदं ॥ ॥ शिमुद्रयाविमज्जनं ॥ ॥ अम्य
 पूर्वगतं पदं भगवती येन न्यरुपात्मकं ॥ ज्ञानात्मा

रास्त्रवसाक्षिणिममशुभद्वैत्वाहि२ त्रिभूलेनभि
 नि२ स्वदेननादय२ देव२ स्वदे२ ह्रीं ममसक
 लमनोरथानसाधय२ परमकाहाराकेभगवतिम
 हाभैरवरूपधारिणित्रिदशवरणा मनेसकलमं
 मातःपुणवजनवत्सलेहं ह्रीं श्रीं श्रीं देवीमहा
 कालिकालनाशिनोपुसोद२ मदनातु एनु ह२ सुरसु
 रकन्यनाहास्त्री ह२ फट् ॥ साद्विलक्ष्मीदेवापादुकापूज
 याभनमः स्वाहा ॥ ॥ इति सिद्धिलक्ष्मीमालामंत्रः ॥

अथविभूतिधारणं ॥ त्रिहचम ॥ ॥ अथारं व्यास ॥
 सामहस्तविभूतिजलनिधायकमुद्रयामाद्यश
 ॐ अस्य श्रीविभूतिधारणमन्त्रस्यपिप्यलोऽत्रमपिज
 गतीदृष्टं ॐ कालाग्निहोत्रदेवताविभूतिधारणो
 विनियोगः ॥ ॥ अथैतितभस्मजलरितिभस्मस्य
 लभितभस्मवायुभितभस्मपासमितिभस्मस्य
 वभस्मायमहोदवायनमः ॥ विभूतिधारणं

ॐ सिध्दानाथाय विष्णु हे ल्य द द्या हे
महोत्तमो रुद्र प्र बो द्या हे

कोणं लिख्य ॥ १४ हं हं हं हं हं हं लिख्य ॥ अघो
रमन्त्राय जपेधा १० ॥ जायत्री १० ॥ अघो रमन्त्रो
जपेत् ॥ ॐ न नुरुत्ताय विद्महे अघोराय धीमही ॥
न नो रुद्रो वो दया ॥ धा ३ ॥ अग्रे निधाय ॥ ॥ ॐ
सदा शिवाय नमः ॥ शिरसि ॥ ॐ प्र सरो २ ॥ ह नो
ॐ नो नरकं नाय २ ॥ कहे ॥ ॐ हव्यवाह नाय २ ॥ हृदि
ॐ स्व दाय नमः ॥ हृदि ॥ ॐ देव देवशा य २ ॥ नाथ

ॐ इन्द्राय २ ॥ दक्षाय २ ॥ ॐ आदिनाय २ ॥ अत्रि
लया ॥ ॐ सोमाय २ ॥ दक्षमाताय २ ॥ ॐ वासुदेवाय २
वासुदेवा ॥ ॐ पुष्पंजनाय २ ॥ देवाय २ ॥ ॐ मरिचा
तुङ्गनाय २ ॥ वासुदेवाय २ ॥ ॐ हराय २ ॥ कहे
हृदि ॥ ॐ महेश्वराय ३ ॥ कहे हृदि ॥ ॐ कालाग्निह
द्राय २ ॥ दुर्गानाथे ॥ ॐ दक्षिणामूर्तये २ ॥

नेत्रयो ॥ ॐ सुदुशेषाय ॥ शिरसि आयये ॥ ॐ व
सुन्दरी ॥ ॐ ॥ ॐ सर्वभूतार्थसहादेवाय ॥ ॐ
यकंसाय ॥ ॐ सोयुधाय ॥ आचम्य ॥ ३ ॥ ॐ
सागराज ॥ जयंत्यसर्वना ॥ ॐ कर्मयोगे
॥ आचम्य ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

सवत् १००० १६ सालमिति अधीकज्येष्ठशुदि
१५ शेज ३ ॐ भूयः सस्तु सर्वदा ॥ ॥ ॥
हें कारासनमातयावजपद्योपकिंतिताष्टतचकच
संदेविकुजि काधनमाभ्यहं ॥ ध्यान ॥ १६ पत्र
रिस्थिता पुकारग
नी

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं दक्षिणे काले श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं का
मं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं नारायण ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं चनी
ये श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं दिनप्रकाश ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
हस्तकलशं सकलश्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
हस्त ॥ अकनेस्वरीया ॥

ॐ पंचमुखि हनुमत्तं ॥ ॐ हनुते अ० ॥ ॐ वं वायुपुत्राय नमः ॥ ॐ अं अजनीसुताय नमः ॥ ॐ रं रामदूताय नमः ॥ ॐ हं हृदयवर्तये नमः ॥ ॐ सं सीताशोकनिवारनाय नमः ॥ ॐ अं

जगदीशुताय नमः॥ ओं हृदय मूर्तये नमः॥ ओं वायुपुत्राय नमः॥
 ओम् अग्निजर्माय नमः॥ ओम् रामदूताय नमः॥ ओम् पंचमुखि
 हृदय मूर्तये नमः॥ ओम् नमो भगवते पंचवदनाय पूर्ववदि मुखाय स
 ततः संहारणाय नमः॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय कुतः मुख
 य आदिवराय स कलसम्पत्कराय ॥ ॐ नमो भगवते पंच
 मुखि हृदय मूर्तये नमः॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पश्चिममुखे गह्वराय स कलवि
 षट्कराय ॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय दक्षिणमुखे करालव
 दनाय नरसिंहाय स कलभूतप्रेतदनाय ॥ ॐ नमो भगव
 ते पंचवदनाय उत्तुर्मुखाय हयग्रीवाय स कलजनवश्य
 कराय ॥ ॐ हरे मर्कट मर्कटाय नमः॥

१५८० साल दिवस
१५८० साल ०२ - गी की रा

श्री श्री गुरुदेव

1.728

I

ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशायनमः॥ अथलिंगार्चनं॥ आवृमनं॥ हुंआ
त्मतत्वायस्वाहा॥ हुंशिवतातत्वायस्वाहा॥ हुंशिवतत्वा
यस्वाहा॥ ३॥ ह्रीं॥ ॐस्वस्तिनइदं॥ वन्देन॥ ॐय
दद्यक॥ सिन्दूर॥ ॐत्वंजीविहृदा॥ अक्षता॥ ॐअक्ष
त्रिमिमदं॥ पुष्पा॥ याफलनी॥ ॥ पुनत्रिरायम॥ न्यास
रंअष्टायफट्॥ अँअङ्गुष्ठाभ्यांनमः॥ अकीयतअनीऽ
भ्यांनमः॥ भूर्भुवःस्वःज्वालिनीमध्यामाभ्यांनमः॥ हुं

अनामिकाभ्यांनमः॥ भाँकनिष्काभ्यांनमः॥ रंकरतए
षाभ्यांनमः॥ एवहृदयादि॥ अँहृदयाग्रः॥ अकीयाशि
रशेस्वाहा॥ भूर्भुवःस्वःज्वालिनीशिरवायेवौषट्॥ हुंक
ववायहुं॥ भाँनेत्रत्रयायवौषट्॥ रंअष्टायफट्॥ अर्धा
सपूजा॥ अँहृदयाग्रः॥ अकीयाशिरशेस्वाहा॥ भूर्भुवःस्वः
ज्वालिनीशिरवायेवौषट्॥ हुंकववायहुं॥ भाँनेत्रत्रया
यवौषट्॥ रंअष्टायफट्॥ आवाहनादिस्थापनवन्दना

स्वोच्छ्रित

क्षत्रपुष्पं २॥ कमलमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ आत्मपूजा ॥ अथ
सूर्यपूजा ॥ ह्रीं पद्मासनाय नमः ॥ ह्रीं अस्यासेनाय २॥
ह्रीं ह्रीं स्वर्गाय नमः ॥ ह्रीं ह्रीं सः आसूर्याय सूर्य मूर्ति
येत्याह ॥ ३॥ आसूर्याय बलिगृह २ स्वाहा बलि ॥ आदि
त्यया के जप ॥ ह्रीं ह्रीं सत्याह १०॥ धार ॥ इदं जपं गृह
नस्याह ॥ मन्दल देयेके ॥ सात्र ॥ जवाकुसुम ॥ ३०
आक्षेप ॥ मन्दल विसर्जन ॥ ३० ॥ विष्णुपूजा ॥ आसम

१०/३
न्पास ॥ ह्रीं सः अस्याय फट् ॥ ह्रीं सः अगस्त्याभ्या नमः ॥ ह्रीं
तर्जनीभ्या नमः ॥ ह्रीं सः मध्यमाभ्या नमः ॥ ह्रीं सः अनामिका
भ्या नमः ॥ ह्रीं कनिष्ठाभ्या नमः ॥ ह्रीं सः करतरपि
भ्या नमः ॥ ह्रीं सहृदयाय २ ॥ ह्रीं सीसरसे स्वाहा ॥ ह्रीं स
शिषावोष ॥ ह्रीं सः कवचाय ह्रीं ॥ ह्रीं सः नेत्रत्रयावोष
ट् ॥ ह्रीं अत्राय फट् ॥ पूजा ॥ ह्रीं पद्मासनाय २ ॥ ह्रीं स
गुरुदासनाय नमः ॥ अर्घपात्रस्य पुञ्जतने ॥ ह्रीं सः न

१ ह्रीं स विष्णवे वि स्वास्तु ते ॥ लक्ष्मी का लु दे वा य व क्षि ॥ ५२

मो जा रा य ना य न मः ३ ॥ वलि ॥ आ वा ह ना दि ॥ र्श स्व मु द्रा
दर्श ये त् ॥ ज प ॥ ॐ ह्रीं सः स्वा हा १० ॥ इ दं ज प गृ ह न स्वा हा
म द ल ॥ क्षा त्र ॥ न मो स्तु नं ता य ॥ वि स्मो र हा ट ॥ ॥ मं द ल वि
स र्ज न ॥ ॥ आ च म्प ॥ ३ ॥ न्पा स भ हः अ स्त्रा ॥ ह्रीं अ गु ० ॥
हि त र्ज नी ० ॥ हुं म ध्या ॥ हे अ ना ० ॥ हो क नि ० ॥ ह व स न र षी ष
भ्या २ ॥ हो ह द ० ॥ हो सी ० ॥ हुं शि षा ० ॥ हे क त्र ० ॥ हो ने त्र ० ॥
ह अ त्रा य ० ॥ पू जा ॥ ह्रीं प द्मा स ना य न मः ॥ ह्रीं वृ षा स ना य

ह्रीं ह्रीं स सदा शिवाय श्री नारायणाय नमः ॥ ५२ स्वाहा
य २ ॥ अर्घ पात्र स थु ड्ग ता ने ॥ ह्रीं ह्रीं स सदा शिवाय न
मः ॥ ३ ॥ वलि ॥ आ वा ह ना दि ॥ यो मि मु द्रा ॥ ज प ॥ ह्रीं स्वा हा
१० ॥ इ दं ज प गृ ह न स्वा हा ॥ ॥ आ च म्प ॥ ३ ॥ न्पा स ॥ जूं सः
अ षा य ० ॥ जूं स अ गु ता ० ॥ जूं स त र्ज नी ० ॥ जूं स म ध्या ० ॥
जूं स अ ना मि ० ॥ जूं स क नी स्ता ॥ जूं स क र त र ० ॥ जूं स ह द
या ० ॥ जूं स सि र से ० ॥ जूं स शि षा ० ॥ जूं स क त्र वा य ० ॥ जूं
स ने त्र ० ॥ जूं सः अ स्त्रा ० ॥ पू जा ॥ जूं स प द्मा स ना य न मः

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सदा शिवाय श्री नारायणाय नमः ॥ ५२ स्वाहा

ॐ स्वस्त्यस्तु नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 जगन्नाथाय नमः ॥ १ ॥ अर्घ्यपात्रस्य धुङ्गतने ॥ २ ॥ जसः सत्य
 जयाय शशिवाय नमः ॥ ३ ॥ बलि ॥ आवाहनादि ॥ त्रिभू
 तैर्मम रुमद्रो दृश्येत् ॥ जाप ॥ जस स्वाहा ॥ १० ॥ इदं ज
 पगृह्णान स्वाहा ॥ ॥ आवम्ब ॥ ३ ॥ न्यास ॥ ज्ञानमते
 रुद्ररूपेभ्यद्रुः महापाशुपताय अस्त्राय फट् ॥ द्रुं अघोर
 द्रुं सार्धं त्मने द्रुं अगृष्टाभ्यां नमः ॥ द्रुं ध्वजोरे द्रुं वृक्ष
 तर्जनीभ्यां नमः ॥ द्रुं घोरघोरतरे द्रुं ग्वालिनीं सधामाभ्यां

उत्तरवत्तायई

दुःसर्वत सर्वसर्वे दुःपिंगल अनामिका भ्या नमः ॥ दुःज्यो
 ति ह्ये पा मने दुःक नि ह्ये का भ्या नमः ॥ दुःनमस्त ह्ये
 रूपे दुःमहापा उपताय दुःकरतल पृष्ठा भ्या नमः ॥ दुःक्षि
 शा नाय उर्ध्वे वक्राय नमः ॥ दुःयंत त्पुरुषाय पूर्वव क्राय
 नमः ॥ दुःरं औघराय दक्षिणव क्राय नमः ॥ दुःवंबा
 मदे वायं नमः ॥ दुःलं सञ्ज्ञा नाय पश्चिमव क्राय न
 मः ॥ दुःक्षि ईशा नाय परापरव क्राय नमः ॥ ॥ दुःक्षि

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

^{ह्रीं}
 घोरे क्रीं सर्वार्थमनेहृदयाय नमः॥ क्रीं ध्वोरे क्रीं वृषाशिर
 से स्वाहा॥ क्रीं धोरघोरतरे क्रीं ज्वालिनी शिषाये वोषट्॥ क्रीं सर्व
 तसर्वसर्वे क्रीं पिङ्गलकववाय क्रीं॥ क्रीं जोतिरुपायत्मेने क्रीं मे
 वत्रयाय वषट्॥ क्रीं नमस्तैरुद्ररूपे क्रीं महापाशपताय अ
 स्त्राय फट्॥ ॥ **मूला**॥ क्रीं पद्मासनाय नमः॥ क्रीं वृषासनाय
 नमः॥ क्रीं अघोरे क्रीं ध्वोरे क्रीं धोरघोरतरे क्रीं सर्वतसर्वस
 र्वे क्रीं जिं सरुद्ररूपे क्रीं महापाशपताय नमः॥ ॥ अर्घपा
^{ह्रीं}

^{ह्रीं} अघोरे राय नमः॥ ३॥ वलि॥ आवाहनादि
 ॥ लिंगमुद्राप्रदर्शयेत्॥ ॥ जाप॥ क्रीं अघोराय स्वाहा॥ १०॥
 इदं जपं गृहान् स्वाहा॥ ॥ मदल॥ स्तोत्रा॥ नमः शिवाय श
 ताय॥ नमः शिवाय व०॥ मदल विमर्जन॥ आवम्य ३॥
 मासलिकाये॥ त्रिहारमुद्रा॥ त्वस्थानवासो भवतु॥ ॥
 इति लिंगार्चनपद्धति समाप्ता॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अथ मूलपूजा॥ ॥ आवम्य॥ **मूला** **वैदरासी** **नूर**॥ अक्ष
 हानवन्द्यासि नूर॥ १॥

नमः शिवाय ज्ञानाय काश्याय नमः॥
 निवेदयामि चात्मानं त्वत्पदौ नमः॥
 मे भव ॥

न॥ पुष्प॥ ॥ त्रिरावस्य॥ सूर्याघ॥ लंषके गवकाय॥ अस्म
 तपश्चि मज्येषां ज्येषु श्रीमहामाया कुडिका उग्रवेदा सिद्धि
 स्मो गुरु काली त्रिपुर सुंदरी देवीनां नित्य कर्म देवाचन पूजा
 फलं कुलसमार्त एव माहा भैरवाय अर्घ्य नमः॥ पुष्प नमः॥ ॥
 देवानस्तानां नावोने॥ दुला सके गवतये॥ ऐं अख एव म एव
 लाकारं व्याप्ये न वरावरं॥ तत्पदं दशितं येन तस्मै श्रीगुरु
 रवे नमः॥ ॥ देवानस्तानां॥ गुरु वृक्षाः गुरु विष्णु गुरु देवमहे

धर॥ गुरु देव जगत् सर्वतस्मै श्रीगुरुवे नमः॥ परम गुरुभ्यो
 नमः॥ परमाचार्य गुरुभ्यो नमः॥ परमेश्वर गुरुभ्यो नमः॥ अर्घ्य
 पात्रस्य॥ अर्घ्यपात्रासनाय पादुका॥ ॥ वलि॥ वलिपात्रास
 नाय पादुका॥ तुलितलेनेखे॥ आत्मासनाय पादुका॥ कु
 मासनाय पादुका॥ ॥ लाहात हिये के॥ किनि र्विवे के
 कनाय अस्त्राय फट्॥ पुये के॥ किनि र्विवे के कनाय
 अस्त्राय फट्॥ ॥ वज्रमुद्रा नत्रिको नवोये॥ हेतु फट्

अस्त्राय पादुका
 वज्रपात्रासनाय पादुका

ॐ पञ्च स्वाहा ॥ ॥ अर्घ्यपात्रसथुङ्गवद्भासतादिधिय ॥ बल
मकुलेकुलमयलेङ्गाङ्गी दुर्गस्वाहा ॥ ॥ प्राणायामन्या
स ॥ वामे गुरुवे नमः ॥ दक्षिणे गारापेतये नमः ॥ अग्नि
देवताय नमः ॥ निरविद्ये को कनायेद् अहं क
र ॥ ॥ ऐकजिकाकाये विद्यहे कुलदीपाय धीमहि नो कु
त्रिपवो द्यात् ॥ कर न्यास ॥ किं निरविद्ये को कनायेद् अ
द्याय फट् ॥ ए नमो भगवते हृत्कमलायै ङां अगुष्टाभ्या नमः

ह्रीं कुत्रिकाये कुलदीपायै क्षान्तर्जनीभ्या नमः ॥ ङां ह्रीं
वरवरशिखे द्रुं मध्यमाभ्या नमः ॥ घोरं अघोरं अघोरामुखी
वहुरुपायै अनामिकाभ्या नमः ॥ ह्रीं ह्रीं महं तारिकायै ह्रीं
कनिष्ठाभ्या नमः ॥ किं निरविद्ये को कनायेद् करतं
पुष्पाभ्या नमः ॥ शिरःस्थे ॥ ए नमो भगवते हृत्कमलायै
आङ्गुवक्राय पादुका ॥ ह्रीं कुत्रिकाये कुलदीपायै ह्रीं पुर्वव
क्राय पादुका ॥ आङ्गु वरवरशिखे द्रुं दक्षिणवक्राय

स्वमलायद्रा ४

पाहुकां॥घोरेअघोरेअघोरामुषिवहुरुपायेद्रैउतरवक्रायपाहुकां
दौर्द्धुमहंतारिकायेद्रैपश्चिमवक्रायपाहुकां॥किनिशिवेवेको
कराणुपुष्पयद्रः परंपरस्वर्जयपाहुका॥दृढयादि॥हेनमोभावतेहस्त
हृदयायनमः॥ह्रींकेविकोयेकलंदोपायेद्रैशिरसेत्या
हः॥ह्रींह्रींह्रींवरवरशिखरह्रींशिषयेवोषट्॥घोरेअघोरेअघोर
मुखीवहुरुपायेद्रैकववायद्रै॥ह्रींह्रींमहंतारिकायेद्रैनेत्रव्या
यवषट्॥किनिशिवेवेकोकनायद्रैअस्त्रायफट्॥घोरामुद्रा

ह्रींयेत्॥अघोरपूजा॥जलपात्रामनायपाहुकां॥ह्रींआनन्द
शक्तिभैरवानन्दवीराधिपतयेह्रींजलपात्रभतारह्रींकय
पाहुकां॥ह्रींहृदयायनमः॥ह्रींह्रींशिरसेत्याह॥ह्रींक
ववाहुं॥ह्रींनित्रवयायवषट्॥ह्रींअस्त्रायफट्॥शंषपात्रस
नायपाहुकां॥आनन्दशक्तिभैरवानन्दवीराधिपतयेह्रींशं
षपात्रभतारकायपाहुकां॥ह्रींहृदयायनमः॥ह्रींह्रींशि
खरह्रींशिषयेवोषट्॥ह्रींकववायद्रै॥ह्रींनेत्रव्या

नमायवषट् ॥ अस्त्राय फल ॥ आवाहनादि ॥ धेनुमुद्रादर्शये
 त् ॥ शंभुमुद्रादर्शयेत् ॥ अर्घ्यांशमसबोडलंघ ~~स~~
 लार्इवलिकपालसहाये ॥ ऐक्यजिकायेविद्येहेकुलदीपाय
 धीमहीतनोक्तुप्रियोदयात् ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ अर्घ्यात्रास
 नायपादुकां ॥ त्रिकुट्टिमुद्रा ॥ क्रौं क्रूं प्रसू २ धोरे २ नस्तनु २
 त्पयत् २ प्रयत् २ कर् २ वसर २ मूरं विद्योदय २ विद्यातय २
 विधिं २ इं ३ फट् क्रौं श्रीमाहाकोमोहिकाविशेषपादुकां ॥
 घातयत्

बुद्धिमानन्दशक्तिभैरवानन्दवीराधिपतये ॥ ~~स्त्रि~~ म
 ल ॥ विद्याराजेश्वरी ~~पा~~ पात्रभक्तारकायपादु
 कां ॥ ह्रीं ह्रदयाय नमः ॥ ह्रीं शिरशेखाहा ॥ हूं
 धारवाये वोषट् ॥ हूं कवचाय हूं ॥ हूं त्रैत्रया
 वषट् ॥ अस्त्राय फल ॥ आवाहनादि योगामु
 द्रां दर्शयेत् ॥ इत्था शकेयीतया ॥ बहमुद्रा

लधिये ॥ हें ॥ ते फा ॥ दि ॥ नरा ॥ श्री कंठ ॥ हें ॥ सु
 न ॥ ~~हें ॥ कंठ ॥ हें ॥~~ को कपाल ॥ श्री कपाल ॥ श्री सुन ॥
 श्री किंठा ॥ श्री नुगल ॥ हें ते पु ॥ मोलतो ॥ ॥ वं न नित्ये ॥ हें व
 न पाडका ॥ श्री अक्षत पाडका ॥ श्री मंदर पाडका ॥ अर्ध पात्र तथ
 जातिये ॥ श्री सर्वजन मोहनी पाडका ॥ स्वा नंदु हें ॥ श्री नाना
 ध्वन अलंकार पुष्पाडका ॥ कपाल सकेयता ने ॥ हस क्षमल वर पु
 सह क्षमल वर यी पाडका ३ ॥ अर्ध पात्र तथु जा हये ॥ क्षु सो पाडका ३

देपा सकेयत या वलिधिया तये ॥ श्री संवर्ती मंदला ते क्रम प
 द संहिता नंद शक्ति सुभीमा ॥ श्री हं न्या ये वतु फें अकुल कुल
 शतं पुंवे कं वा ल्य मंद ॥ वत्वार पंवे को न पु न रा पं वतु रत घतो
 म न्द ले न ॥ श्री शृष्टं ये न त स्मै न मथा ग ह्व रं मे र वं श्री कु जेश
 ॥ इदं आ वा ह यि को आ वा ह यामि न मः ॥ ॥ पूजा न रा स ना य पा
 डका ॥ श्री प्र रत्न क्षीप म ह धां क्ष क्षी त्र पाडका ॥ वलि ॥ मुषा स
 ना य पाडका ॥ गों गिं गै कु लग रो ध रा य पाडका ॥ वलि ॥ आ

सतं सतं सतं सतं श्री

श्री कंठ ॥ हें ॥ सु

वाहनादि॥ दंतर्जनीगजमुद्रा^{वि५}दर्शयेत्॥ ॥ तदन॥ श्री
नाथायनमः॥ श्रीसिद्धिनाथायनमः॥ श्रीकुब्जेसनाथायनम
पूजा॥ पद्मासनायपादुकां॥ ह्युमां आनन्दशक्तिभैरवानन्दवीर
धिपतयेसु॥ त्रिशुभं नारु॥ कायपादुकां॥ वलि॥ प
द्मासनाय पादुकां॥ तर्का॥ सनायपादुकां॥ सिंहास
नायपादुकां॥ ॥ ह्युमां आनन्दशक्तिभैरवासनाप्रवीरपतये
स्त्रिभुवनं महाशय॥ राजेश्वरि श्रीनवात्मागुहमराभर

कायपादुकां॥ वलि॥ पिप्पसासनायपादुकां॥ ह्युमां जीगुहपंक्तिभ
नारकायपादुकां॥ वलि॥ ह्युमां ओसधीकर्मभूतनाकाय
पादुकां॥ वलि॥ पद्मासनायपादुकां वृषा॥ सनायपा
दुकां॥ सिंहासनायपादुकां॥ ह्युमां आनन्दशक्तिभैरवा
नन्दवीरधिपतयेसु॥ श्रीमहाविद्या॥ राजेश्वरि श्रीकरा
नाथस्वरशक्तिसहि॥ नायपादुकां॥ वलि॥ हंसासनाय
पादुकां॥ वृषासनायपादुकां॥ मयुरासनायपादुकां

गहसासनायपाडुकां॥ममहिमासनायपाडुकां॥गजासनाय
पाडुकां॥प्रेतासनायपाडुकां॥सिंहासनायपाडुकां॥॥
हेअघोरेअमोघवरदेविमलेचंद्रसानीविद्येपाडुकां॥बलि
हेअघोरेकंमाहेअघोरेविद्येपाडुकां॥बलि॥हेअघोरेयं
मारेविद्येपाडुकां॥बलि॥हेअघोरेहंवेसवीविद्येपाडु
कां॥बलि॥हेअघोरेतंवारहाविद्येपाडुकां॥हेअघोरेप
इदानीविद्येपाडुकां॥बलि॥हेअघोरेयंवासुखावि

द्येपाडुकां॥बलि॥हेअघोरेशंमहालक्ष्मीविद्येपाडुकां॥
॥बलि॥प्रेतासनायपाडुकां॥मांमिंमुंमहाकालायपा
डुकां॥बलि॥ह्रींश्रीसिद्धिवासुदेव्यंविद्येपाडुकां॥
बलि॥प्रेतासनायपाडुकां॥क्षींक्षींक्षींक्षत्रपालायपाडुकां
॥बलि॥पद्मासनायपाडुकां॥सिंहासनायपाडुकां॥॥
सिंशंतिपिंगतिकुटुकुटुर्कंजयेवागीश्वरदुमहंतारि
कायैविद्येपाडुकां॥पद्मासनायपाडुकां॥पञ्चपेतास

नाथपाहुकां॥ नमः श्रीं श्रीं वल्लोको ग्राये नमः श्रीं श्रीं पाहुकां॥ व
 लि॥ श्रीं अघोरे श्रीं अघोरे श्रीं घोर घोर न रे श्रीं सर्वत सर्वत
 ये श्रीं अमर इ रूपे इ पाहुकां॥ एवमेव विनी श्रीं कामा इ श्रीं
 विनी लीली श्रीं महासंक्षोभ कारिणी ऐसो सः श्रीं पाहुकां॥ ए
 नमो भगवते श्रीं कृष्णकाये श्रीं श्रीं वरवर शिषे घोर अ
 घोर मुखी श्रीं कि निर विद्ये पाहुकां॥ **बलि** हये के ॥ ये
 के विद्यो गिनी नां पीठ जा क्षत्र जा योग जा गर्भ जा सौ दो ह जा

जायार

ये के विद्यो गिनी नां क्षेवरि भूवरि दिग्यरि एका क्षरि द्वि क्ष
 रि त्रि क्षरि यतुः पंच पर सप्त अष्ट नवा क्षरि शां यथा पटि
 ता नां मम सिद्धिं कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु स्वाहा॥ ॥ पूजा॥ श्रीं
 वल्लोको नाथपाहुकां॥ श्रीं आनन्द शक्ति मेरु वानन्द
 वीर धिपतये स्वाहा अष्ट श्रीं विशांतिकर्म भनारका
 यपाहुकां ~~स्वाहा~~ तदुत्पल ~~स्वाहा~~ मान स्वतः सर्व स्वतः त्रि

ॐ श्री गणेशाय नमः
ॐ श्री गणेशाय नमः
ॐ श्री गणेशाय नमः

स्वराज्यभक्तारकायपादुका॥ वलि॥ पद्मासनायपादुका॥ वृषास
नायपादुका॥ सिंहसनायपादुका॥ पद्मप्रेतासनायपादुका
॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ भैरवानन्दवीराधियतये स्वा ॥ पिथिम
मूल ॥ स्थानभक्तारकायशोभात्रिकेश्वरकु ॥ जिक
स्वादेवपादुकां पूजयामिनमः॥ ३॥ ॐ हृदयान ॥ मः॥
ॐ शिरशे स्वाहा॥ ॐ शिखायेवौषट्॥ ॐ कवचाय ॐ॥ ॐ
नेत्रत्रयाय वषट्॥ ॐ आखाय फट्॥ ॥ वलिहायेवे॥

समस्तमंत्रपीठसिंहासनपीठोपपीठक्षेत्रोपक्षेत्रसंदेहे
वर्तते हृदयसिद्धिसमयेव न उक्तं नुजत्कीं चित्ते ॐ हृद
यपादुकां वलिग ॐ ग ॐ स्वाहा॥ ॥ श्री वाहनादि॥ योनि
मुद्रादश्चिह्नं॥ तपन॥ प्रतिमा पूजा॥ पद्मासनायपादुका
॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ प्रतिमाभक्तारकायपादुकां पूजयामिनमः॥ ३॥
ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ पद्मप्रेतासनायपादुकां॥
ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ शिखायैवौषट् नमः भैरवा

यपाङ्का पूजयामिनमः ॥ ३ ॥ यद्वासनायपाङ्का ॥ वृषास
नायपाङ्का ॥ नाक्षासनायपाङ्का ॥ ~~आनन्दशक्ति~~
भैरवानन्दवीरधिमत्तयेस्त्वामिजिज्ज ~~वन्द्ये~~ भरीदेव्येपा
ङ्का पूजयामिनमः ॥ ३ ॥ ~~वति~~ ॥ ~~अथ चण्डा पूजा~~ ॥ ॐ भुंभासना
यपाङ्का ॥ त्रिभुंभासनायपाङ्का ॥ महीषासनायपाङ्का ॥ ॐ
हो गजप्रदेह्ये उग्रवन्दे रिपुरमर्दिनीहं प्रेसदारक्ष २ त्वां मां तु स
मृत्युहरेपाङ्का पूजयामिनमः ॥ ३ ॥ ~~वति~~ ॥ ~~सिद्धिस्तस्मी पूजा~~ ॥

हं महोपेतासनायपाङ्का ॥ हं रुद्रप्रेतासनायपाङ्की ॥ ॐ ह्रीं हूं
हो प्रेक्षे को नमः स्वाहापाङ्का पूजयामिनमः ॥ ३ ॥ ~~वति~~ ॥ ~~गुह्य~~
~~काशी पूजा~~ ॥ खे मरुद्भिरासनायपाङ्का ॥ खे मरुपात्रासना
यपाङ्की ॥ खे श्रीमहाचण्डयोगेश्वरी देव्येपाङ्का पूजयामि
नमः ॥ ३ ॥ ~~वति~~ ॥ ~~त्रिपुरसुन्दरी पूजा~~ ॥ यद्वासनायपाङ्की ॥ हं
रक्तपद्मासनायपाङ्का ॥ पञ्चप्रेतासनायपाङ्का ॥ हं ह्रीं हूं
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देव्येपाङ्का पूजयामिनमः ॥ ३ ॥ ~~वति~~ ॥

ॐ नमः ॥ ह्रीं हृदयाय नमः ॥ श्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ह्रीं शिरसायैवोषध
॥ ह्रीं कवचाय ह्रीं ॥ ह्रीं नेत्रत्रयाय वषट् ॥ ह्रीं अस्त्राय फट् ॥ ॥
आवाहनदि ॥ ॥ त्वाकमहावह्नि ॥ क्षांक्षत्रपाताय वलिंगं
ह्रस्वाहा ॥ श्रीं श्रीं कुलपुत्रवदुकनाथाय वलिंगं ह्रस्वाहा
॥ गौं गौं कुलगणेश्वराय वलिंगं ह्रस्वाहा ॥ यां योगिनीभ्यो
वलिंगं ह्रस्वाहा ॥ श्रीं श्रीं सिद्धिचामुण्डेश्वरी देवी वलिंगं ह्र
स्वाहा ॥ ह्रीं महाकरवीररुमशानाधिपतये वलिंगं ह्रस्वाहा

॥ सर्वभ्यो भूतेभ्यो वलिंगं ह्रस्वाहा ॥ सर्वभ्यो पिशाचेभ्यो वलिंगं
ह्रस्वाहा ॥ सर्वभ्यो इष्टदेवताभ्यो वलिंगं ह्रस्वाहा ॥ सर्व
भ्यो खेचरीभ्यो वलिंगं ह्रस्वाहा ॥ ॥ वह्निहायेवे ॥ समस्त
मन्त्रपीठसिंहासनापीठोपपीठक्षेत्रोपक्षेत्रसंदोहोपसंदो
हदिव्यसिद्धिसमयचक्रउक्तानुक्तं यत्किंचित् सत् सद् हृदयाय वा
हुकां वलिंगं ह्रस्वाहा ॥ आवाहनादि ॥ धेनुयोनिमुद्रां दर्श
येत् ॥ तर्पणं ॥ अर्घ्यपात्रयाज्ञं स्वनने वेद्यसहस्रं ॥ चतुर्ष्व

स्कारताडन॥ विनि२ विवेकोक्तताय ५ अस्त्राय फ ५ ॥ हा
हातगुंथी छिये ॥ घारे अघारे अघारे मुखी बहुरूपाये हे क
वचाय हं ॥ बंधे नु योनि मुद्रां दर्शयेत् ॥ नैवेश्यथि स्यंते ॥
संक्रियाये विघ्न हे कुतही पाय धीमही त नो कुत्रि प्रचोद
यात् ॥ ॥ हं स्वदेग्व नैवेश्य ५ येकं तने ॥ इदं नैवेशं नमः ॥
हा हा तने पां केने ॥ अर्घ पात्र स थु डा व ज प या य ॥ ॥ प्रो
स्वाहा ५ ॥ श्रीं स्वाहा १० ॥ ग्लौ स्वाहा ५ ॥ देपा सत्रिको

न ॥ यस्वानवे गोतये । जपयाय ॥ नवात्मा ॥ स्त्री स्वाहा स्त्री
स्वाहा ५ ॥ मृत ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥ श्री स्वाहा ५ ॥ स्त्री
स्त्री स्वाहा ५ ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥
उग बेटा ॥ हरे वृ स्वाहा ५ ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥
॥ ॐ ह्रीं हुं हौं प्रे क्षं को नमः स्वाहा ५ ॥ गुह्य का हि ॥ ५
स्त्री स्वाहा ५ ॥ त्रिपुर सुन्दरी ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥ स्त्री स्वाहा ५ ॥
देपा सत्रो ड कि गो ज व स पो न के ॥ अर्घ पात्र या जे ख न ल

ये ॥ देवताया के स्वान द्याये ॥ धमनं ह्युये ॥ देव के तानो ॥
इदं जयं गृहान स्वाहा ॥ मण्डल द्ये के के बो डो गो नये ॥
स्वान नये ॥ स्तोत्र ॥ ऐं अवा ए मण्डला कारं व्यापुं स न वरा च
रं ॥ तत्पदं दक्षिं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ श्री संवत्ती मण्डला
त्रे क्रम पद द्वा हि तान न द्वा क्षि सुधी मा भूषं न्याये च नु सुं अक
लि कुल गतं पञ्चकं चान्य षट् ॥ चत्वारो पञ्च कोणे पुनरपि च
तुरत शतो मण्डलेन संसृष्टं येन तस्मै नमः पगुरुवरं भैरवं श्री

कुजेश ॥ ॥ स्यामारक्तत्रिनेत्रास्तनभरणा युता मत्तमातं
गगामि ॥ विम्बोष्ठी चारुनेत्रा पृथु वस्त्र धर्मा मेघ तार त्रयो
भि ॥ देवांगे वस्त्र सो भै वर वर कुसुमे वर्व रे केश भारे ॥ स्या
मे श्री कुविकार व्या वितर तु त र सा ज्ञान दिव्यो घमो घ ॥ ॥
देवान के गोता मे ॥ यथा वा ए प्रहाराणां कवचं भवतु वारणा
॥ तत्र देवो विधातृणां शान्तिर्भवतु वारणा ॥ यो नि मुद्रान
मस्कार ॥ अं न्यत्र शरणां नास्ति त्वमेव सरणां मम ॥ तस्मा

मकारणाभावेनरक्षमां परमेश्वरी ॥ नैवेद्यद्वये ॥ हंष
तने ॥ तर्पन ॥ मण्डले के जो माने ॥ स्नानकार्ये ॥ सहाई सिं
ताने ॥ सहाई स्नाने ॥ स्नानने पानं अर्घपात्र सथुडावक
पात्र सहाय ॥ किनि २ विज्ञे को कनाय ॥ अस्त्राय फ ॥
स्नानं दुये ॥ वहि ध्वये ॥ हंष के गोकाया ववहि दुये के
ताने ॥ ॥ हिनंग छ २ स्वाहा ॥ अर्घपात्र अर्घा शंख या स्वा
नवहिस ताने ॥ ३ ॥ किनि २ विज्ञे को कनाय ॥ अस्त्राय फ

॥ ३ ॥ देपासो हापाचिनं धिये ॥ रें ॥ सहाई ॥ हिनं वि
श्रीं नुगते ॥ स्त्रै स्त्रै ॥ साहा दये ॥ मुये के ॥ किनि २ विज्ञे
को कनाय ॥ अस्त्राय फ ॥ संहार मुद्रा ॥ स्वस्थान वा सो भ
वंतु ॥ शंख अर्घा अर्घपात्र पशु पात्र ध्यते या लंख ॥ सुल
खुल नये वहिस ॥ आनं म्य ॥ न्यास तिकाये ॥ अर्घा शंख
या लंख न सहाई सुदुये के ॥ साधि ॥ लंख के वा ताने ॥ अ
स्मत्पश्चिम ज्येष्ठं ज्येष्ठ श्रीमहामाया कुट्टिका उग्र रेखा

सिद्धि लक्ष्मी गुह्य कर्त्तृ त्रिपुर सुन्दरी देवी नानि तप कर्म देवा
 न्न पूजा सम्पूरा र्थं कर्त्तुं कुत मा तिरि दुभै रवाय अर्घ्य नमः
 ॥ पुष्प नमः ॥ **केशव शि पूजा ॥ श्री सूर्याय नमः ॥** नारायणाय
 नमः ॥ सदा शिवाय नमः ॥ मृत्युंजयाय नमः ॥ अघोराय नमः ॥
 श्री पञ्चपतये नमः ॥ गङ्गा नारायणाय नमः ॥ शंकर नारायणाय
 नमः ॥ मलेश्वरीयै नमः ॥ पद्मासनाय नमः ॥
 वृषाक्ष नाय नमः ॥ तारासि नाय नमः ॥ **सूर्याय नमः ॥** आनन्द शक्ति भैरवा

नन्द वीरा धिय तये स्फूर्ति श्री जय केशव शि देवी भद्रा रिका ये पाठु कं
 पूज्या भिनमः ॥ ३ ॥ **वृं ग ॥** आवाहनादि । **यो निमुद्रा ॥** जप ॥ **पु**
 स्वाहा ॥ ३ ॥ **इदं जपेत्** **हान स्वाहा ॥** स्ता ॥ **या देवी सवजीव वं**
 शुक् निभा श्री कण्ठ वैकुण्ठयोः शक्ति र्पात्व मता रिरा त्रिनय नाङ्कारे
 वी जोद्मता ॥ तार्क्ष्वा वृषभा सिंहा भगवती श्री चरु योगेश्वरी पाया मे
 पामेश्वरी विजयते श्री देव केशव शि ॥ **देव जपे ॥** इत्येतु ॥ ॥ ॥
निर्मल पूजा ॥ निर्मल चण्डना थाय नमः ॥ **सूर्याय पूजा ॥** इति नित्य

श्री सूर्याय नमः ॥ ३ ॥